

वृद्धों के देखभाल में परिवार की भूमिका:- एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ चन्दन कुमार पांडेय

असिस्टेंट प्रोफेसर समाजशास्त्र

राजकीय महाविद्यालय मौदहा हमीरपुर उत्तर प्रदेश

सारांश- परिवार मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है। यहीं पर व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने जीवन को व्यतीत करता है। शिशु से लेकर वृद्ध तक परिवार से अपनी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को पूरी करता है। परिवार मानव जीवन के हर मोड़ पर अति महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। जब बात वृद्ध व्यक्ति की आती है तो सबसे पहले परिवार ही दिखता है जहां उनकी समुचित देखभाल हो पाती है। परिवार वृद्ध व्यक्तियों के लिए नैसर्गिक रूप से देखभाल, सेवा-सुश्रुषा आदि के लिए सबसे उत्तम संस्था है। वृद्ध व्यक्ति अपनी पारिवारिक सदस्यों से बहुत ही अपेक्षा रखता है क्योंकि आज जो वृद्ध है वह कल अपना सर्वस्व इस परिवार के सदस्यों पर न्यौछावर कर चुका होता है। परिवार को वृद्ध व्यक्ति अपनी संपदा मानता है। कुछ समाजशास्त्रियों ने तो परिवार को वृद्ध व्यक्ति के लिए बैंक तक की संज्ञा दे डाली है। वृद्धावस्था में परिवार पर निर्भरता हमारे समाज और संस्कृति में समाहित है। सरल शब्दों में कहें तो परिवार के बिना वृद्ध व्यक्ति का जीवन असंभव सा प्रतीत होता है।

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोत से प्राप्त तथ्यों के आधार पर वृद्ध व्यक्तियों के जीवन में परिवार की महत्ता को जानने का प्रयास किया गया है।

वास्तव में “एक व्यक्ति जन्म से ही न तो मनुष्य होता है और न ही सामाजिक। उसे इन दोनों शब्दों से अवगत कराने वाली प्रथम संस्था परिवार होती है, जो कि व्यक्ति के व्यवहार

प्रतिमान व चरित्र के स्तर का निर्धारण करती है” (प्रभु 1979)। परिवार मानव समाज में विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुए हैं। जैसे-जैसे जीवन की गतिविधियाँ बढ़ती जाती हैं वैसे-वैसे इस परिवार रुपी संस्था की पहचान एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न-भिन्न तथा एक ही समाज के विभिन्न समूहों में तथा व्यक्तिगत रूप में भी इसकी प्रस्थिति, पद भिन्न-भिन्न होती जाती हैं (विजय कुमार 1991)। इस प्रकार परिवार व्यक्ति व समुदाय दोनों के जीवन में मुख्य संस्था के रूप में विद्यमान रहता है इसके बिना किसी भी व्यक्ति का जीवन सम्भव नहीं है। इसमें विवाह सम्बन्धी व रक्त सम्बन्धी आपस में बंधे रहते हैं। उनके बीच अन्तर्क्रिया व समायोजन परिवार के सभी सदस्यों को एक संगठित समाज की तरह आपस में बाँधे रखती है। “इसका उपयोग सभी आयु वर्ग की आवश्यकताओं व रुचियों को पूरा करने के लिये होता है” (विस्वास 1988)। यह तथ्य पूर्णरूपेण स्वीकार्य है कि परिवार की देखभाल में मुख्य भूमिका होती है। वहीं भाटिया (1983) के अनुसार यह धर्म के बाद दूसरी ऐसी संस्था है जो कि औपचारिक रूप से सभी समाजों में व्याप्त है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति पर पारिवारिक कर्तव्य एक उत्तरदायित्व के रूप में होते हैं। जहाँ एक दूसरे को शारीरिक-भावनात्मक, आर्थिक, सामाजिक सम्बन्धों का आदान-प्रदान होता है (नायर, 1980)। या फिर आवश्यकताओं के कारण सभी उम्र के लोगों की एक दूसरे पर निर्भरता होती है। परिवार में एक व्यक्ति सेवादाता होता है जो सेवाग्राही को सभी या अधिकतर देखभाल प्रदान करता है (ब्रूडी, 1990), सिसरेली (1981), होरोविट्ज (1985)। जीवन की प्रत्येक अवस्था में परिवार देखभाल व सेवा प्रदान करने की प्राथमिक इकाई है, जो कि वृद्ध लोगों के लिये औपचारिक सामाजिक व्यवस्था की तरह कार्य करती है (ब्रूडी, 1978)।

परम्परागत ग्रामीण भारत में परिवार का अर्थ ही संयुक्त परिवार से लिया जाता है। सामान्यतः संयुक्त परिवार में दो या अधिक पीढ़ियाँ एक सामान्य आवास में रहती हैं व संयुक्त सम्पत्ति का उपभोग करती हैं जहाँ घर का वयोवृद्ध व्यक्ति घर का कर्ता होता था (मजूमदार 1952)। जिसकी आज्ञा का पालन करना सभी का कर्तव्य माना जाता था, उसी की सलाह से युवा वर्ग अपने कार्यों का सम्पादन करते थे, वहीं घर को निर्देशित करने वाली वृद्धा घर के बच्चों का पालन-पोषण व सामाजीकरण में सहयोग करती थी। कुल मिलाकर एक सम्पूर्ण संस्था जिसमें सभी के अधिकार व कर्तव्य निर्धारित थे।

इस प्रकार संयुक्त परिवार भारतीय समाज की आधारशिला हैं जो व्यक्तिवाद के स्थान पर समष्टिवाद के आदर्शों की पुष्टि करते हैं। प्रभु (1958) ने उचित ही लिखा है कि “हिन्दू परिवार पर विचार करते समय जो प्रथम वस्तु आलोकित होती है वह उसकी संयुक्त प्रकृति है।” संयुक्त परिवार में वयोवृद्ध व्यक्तियों को अत्यधिक सम्मान प्राप्त होता था क्योंकि उन्होंने जीवन में अत्यधिक उतार-चढ़ाव देखे होते थे और वे युवा सदस्यों की अपेक्षा अधिक अनुभवी होते थे अतः वे अपने अनुभवों के आधार पर भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त करते थे व उनके जीवन में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाते थे। संयुक्त परिवार अपने सदस्यों के लिये एक संकट कालीन बीमा हैं जो अनाथ बच्चों, विधवाओं व वृद्ध व्यक्तियों को आश्रय प्रदान करता है तथा उन्हें यथासम्भव आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर चिन्ता से मुक्ति दिलाता है। पणिकर का कथन है “भारत के समाजशास्त्री आज भी संयुक्त परिवार को इस आधार पर उपयोगी मानते हैं क्योंकि इसने व्यक्तिगत स्वार्थों का दमन करने व वृद्धों, बेरोजगारों व असहाय व्यक्तियों का सामाजिक बीमा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गंग्राडे (1987) ने भी कहा है कि, “भारतीय संयुक्त परिवार का स्वयं में अस्तित्व नहीं है वरन् यह सामाजिक व्यवस्था का एक अखण्ड भाग है, जिसमें वृद्धों की देखभाल व सुरक्षा भली प्रकार हो जाती है।” समाज में प्राप्त इस उच्च आदर व सम्मान के कारण युवा पीढ़ी द्वारा अपने वृद्धों को अपने पालन पोषण के लिये कृतज्ञता व्यक्त करना होता था (चौधरी 1992)। और इस प्रकार वृद्ध जीवन के इस अन्तिम चरण को आनन्दपूर्वक व्यतीत कर पाते थे। बाली (1995) वृद्धों की पारिवारिक देखभाल को सांस्कृतिक निर्धारक व सामाजिक शक्तिवर्धक के रूप में देखा जा सकता है (कालाचे, 1990), नीसमिथ व इडवर्थ (1984), नायर (1992), गंग्राडे (1989) व शाह (1973)।

परम्परागत ग्रामीण भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण लक्षण संयुक्त परिवार इसलिये होता था क्योंकि ग्रामीण आर्थिकी कृषि आधारित होती थी जिसमें अधिक लोगों की आवश्यकता होती है। नाग व उनके सहयोगियों (1978) ने बताया कि कृषक परिवार की आर्थिकी में बच्चे माता-पिता की सहायता करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। साथ ही ज्ञान के श्रोत मौखिक होते थे व युवा मौखिक रूप से वृद्धों से जानकारियाँ प्राप्त करते थे। यह विश्वास किया जाता था कि आयु के साथ व्यक्ति अनुभव व ज्ञान प्राप्त करता है और

अपने वृहद अनुभवों द्वारा युवा पीढ़ी की भिन्न-भिन्न रूपों में मदद करते हैं और इसके बदले में आदर और सम्मान प्राप्त करते थे। इस प्रकार सम्बन्धों की व्यवस्था जीविका अर्थव्यवस्था की मध्यस्थता द्वारा सुदृढ़ व प्रोत्साहित होती थी जैसा कि प्रभु (1954) व कर्वे (1953) ने भी माना कि प्राचीन व मध्य भारत में परिवार व समाज दोनों में वृद्धों को कृषि अर्थव्यवस्था व संयुक्त परिवार होने के कारण उच्च स्थान प्राप्त था (टण्डन, 2001)।

संयुक्त परिवार व्यवस्था में जाति व ग्रामीण समुदाय जो कि भारत में परम्परागत संरचना के दृढ़ सूचक थे, वृद्ध व्यक्तियों की आर्थिक सुरक्षा एवं उच्च सामाजिक प्रस्थिति के सन्दर्भ में पूर्णतयः विश्वस्त थे। ग्रामीण व जाति पंचायत का संचालन व नियन्त्रण वृद्धों द्वारा होता था जिससे इस व्यवस्था द्वारा न केवल वृद्धों को सम्मान प्राप्त होता था वरन् वह किसी भी प्रकार के विचलन के लिये अवरोधक का कार्य करती थीं। कुल मिलाकर परिवार वृद्धों के लिये एक अलग आयाम रखता है साथ ही उन्हें प्राथमिक सहायता उपलब्ध कराता है (खान 1997)। इस प्रकार परम्परागत परिवारों में संतान मुख्यतः पुत्र, वृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं (हिमबिन्दु 2001)। माता-पिता के लिये बच्चे उनके शरीर का ही एक अंग हैं तो बच्चे भी माता-पिता को एक नैतिक उत्तरदायित्व के रूप में मानते हैं (सिसरैली, 1981), मानसिनी (1989), मान्तोगोमेरी (1992), स्टोन, कप्फाराटिया व सन्गल (1987), तो वहीं ऊषारानी व उनके सहयोगियों (1989) ने कहा कि माता पिता द्वारा संतानों को एक आकर्षक पूंजीनिवेश के रूप में माना जाता है जिसका लाभ उन्हें वृद्धावस्था में देखभाल के रूप में प्राप्त होगा। बच्चों को माता-पिता के प्रति आदर व सेवाभाव सामाजीकरण द्वारा सिखाया जाता है। जिस प्यार व अनुराग को वे अपने बाल्यकाल में अपने माता-पिता से प्राप्त करते हैं उसी को उनके वृद्ध हो जाने पर लौटाते हैं।

इस प्रकार परम्परागत समाजों में परिवार ही वह प्राकृतिक संगठन है जहाँ वृद्धों की देखभाल व सहायता की जाती है। उनकी देखभाल मुख्यतः पारिवारिक सदस्यों यथा पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, बहू इत्यादि के द्वारा की जाती है। ये तन्त्र न केवल भावनात्मक रक्त व वैवाहिक सम्बन्धों द्वारा बंधा होता है बल्कि परम्परागत मूल्यों, प्रतिमानों व व्यवहार द्वारा जुड़ा होता है।

References

- Prabhu P.N. (1979) in K.G.Gurumurthy: TheAged in India Reliance Publishing House, New Delhi.1998,pp97-98.
- Kumar Vijay, S.(1991).Family Life and Socio-Economic Problems of the Aged, Ashish Publication New Delhi.
- Biswas S.K. (1988) Ageing in Contemporary India .An Anthropological Society, Culcutta.
- Nayar P.K.B.(1980) in Arun P. Bali, Role of Family in Elderly Care Research and Development j1,vol-2, no-1, 1995 pp 34-35.
- Bhatiya H.S. (1983) Aging & Society: A Sociological Study of Retired Public Servents, Arya Book Centre Udaipur.
- Majumdar D.N. (1952) Races and Culture in India,Bombay,Asia publication house.
- Kerve Irawati(1953) Kinship Organization in India,Deccan College Post Graduate Research Institute, Pune.
- Helpage India(2005) Research and Development Journal,June,pp-20.